कथारचना

विषय → मुझे भी है एक सपना,

मेरा भी एक सपना है।

आज वो दिन था, जिसका मुझे हमेशा से इंतज़ार था, शायद औ हर किसी को पसंद न हो, मगर.. मैं शायद अलग थी, समय धीरे-धीरे निकला जा रहा था, मैं घड़ी के सामने बैठे उसको देखे जा रही थी, मैं घड़ी की टीक-टीक अपने कानों पर महसूस कर रही थी, ऐसा लग रहा था.. जैसे... समय आगे बढ़ ही नहीं रहा, एक-एक पल गुज़रना मेरे लिए मुश्किल हो रहा था, मैं सोफ़े पर बैठी थी, अपने नाखुन चबा रही थी, घर के बाकी सब अपने-अपने काम पर व्यस्त थे।

फिर, बहुत ही देर बाद, आखिर

मे, तो समय आ ही गया, मैंने अपना फोन बहार निकाला, और दूसरी का रिज़ल्ट देखने लगी। धीरे-धीरे मैंने अपना रिज़ल्ट ढूढ़ा। मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धक-धक करने लगा, ये पल मेरे लिए कितना कीमती था, जो मैं बया नही कर सकती थी। मेरा बचपन से सपना था, की मैं एक डॉक्टर बनू। और वहा तक का सफर होगा भी या नही इसे नही पता था। मगर चाहे कुछ भी हो जाए, मैं अपनी जान लगा के भी, डॉक्टर बनने के लिए तयार हुँ। आखिर मे मैंने अपना रिज़ल्ट देखा, मैं अचानक से चिलायी,

"ये, मैंने कर दिखाया"

मैं बहुत खुश थी, क्योंकि मैं ने दूसरी अच्छे संख्याओं से पास किया था। मैं खुदको अब उस पंछी की तरह महसूस कर रही थी, जिसने शायद अब अपने

मंज़िल की ओर उड़ान भरने के लिए अपने पंख फैला लिए थे। मेरे मन में, खुशी के कारण उत्सुकता थी। कि मैं भाग के अपने पिताजी के पास जाने लगी। तभी माँ, मेरे सामने आई और उन्होंने मुझसे पूछा,

"अरे क्या हो गया? इतना चिल्ला क्यों रही हो?"

"अरे, माँ... पता है आज रिज़ल्ट आने वाला था।"

"आ गया?"

"हाँ... आ गया।"

"अच्छा बोल कैसा है तुम्हारा रिज़ल्ट।"

"पता है। मैंने टोप किया है.. टोप।"

"क्या? सच में?"

"हाँ, माँ सच में।"

"ये तो बढ़िया बात है।"

"तो ठीक है माँ, मैं ये खुश खबरी पिताजी को भी सुनाती हूँ।"

मैं बहार जाने लगी, तभी ~~मे~~ मेरे पिताजी खेत में चारा डालकर घर वापस ~~आए~~ आए। मैंने उन्हें भी ये खबर सुनाई। उनका चेहरा चमक उठा, और उन्होंने मेरे कंधे पर हाथ रख कर माँ से बोला,

"देखा सुशमा, ये मेरी हुनहार बेटी है।"

मैं अंदर से झूम उठी, जब मेरे पिताजी ने मेरी तारीफ की तो।

मैं अपने दिल कि बात और छुपा नही सकी और मैं ने उनसे कह दिया, अपने माँ-पिताजी के सामने। वो भी अचानक। मुझे लगा वो खुश हो जाएँगे, मेरी ये बात सुनके, मगर... अचानक उनका चेहरा उतर गया, पिताजी ने ~~भी~~ मेरे कंधे से अपना हाथ धीरे से निकाला। ऐसा लग रहा था जैसे, उनसे किसीने उनके मूँह के शब्द छीन लिए हो। दोनो एक दूसरे को देखने लगे।

यह देखकर मेरा खुशी से भरा चेहरा भी धीरे-धीरे उतर गया। ओ कुछ कह नहीं रहे थे, मगर उनके खामोशी में, मैं ने अपने सवाल का जवाब पहचान लिया था।

मैं ने पिताजी से कहा,

"पिताजी आप काम कर के आए हैं, आप थोड़ा आराम कर ली जिए। और हा, माँ, शायद आपने गैस पर कुछ रख रखा है। जल्दी जा के देखकर आइये वरना खाना जल जाएगा।"

वे दोनो, चुप-चाप बिना कुछ बोले अंदर चले गये। मैं अपने कमरे में आई। बिस्तर पर लेट कर, मुँह में कपड़ा रखकर रोने लगी, ताकी माँ बाप को मेरे रोने की कि आवाज़ न सुनाई दे। उस छोटे से कमरे में मैं ज़ोर-ज़ोर से चिलाना चाहती थी, मगर, मैं ओ कर नहीं पाई, पता नहीं क्यों, मैं मन ही मन सोचने लगी, कि

मैं ही ~~बुद्धू~~ बुद्धू थी, कि मैंने सोच कैसे लिया कि मैं एक डॉक्टर बनूँगी, शायद मैं इतनी बेवकूफ थी कि मैं ये भूल गयी थी कि मेरे पिताजी तो एक किसान हैं, और हम कितने गरीब हैं। मगर मैं ये भी सोचने लगी, की... क्या मेरा सपना भी एक सपना नही है? क्या मुझे अपने सपने खुद बनाकर, उस पर खुद चलने का अधिकार नही? क्या.. मेरे सपनों का उतना महत्त्व नही, जितना, बाकियों का होता है?

ऐसे कयी सवाल मैं खुद से पूछने लगी, जिसका ~~उत्तर~~ उत्तर मन या दिमाग में आ ही नही रहा था। मैं रोए जा रही थी, जिसके कारण, मेरी मानसिक-स्तिथि थो ~~ड़~~ड़ी खराब हो रही थी। खुशी, संतुष्टी जैसे भावनाओं को छोड़ कर बाकी के सारे अलग-अलग भावनायें मेरे मन में भरे पड़े थी।

समय कब निकला ये पता ही नही चला। शाम हो गयी, मैंने खुदको संभाला, और अपना मुँह धो कर बहार निकल ने लगी। तभी मैं कमरे के अंदर बैठे अपने माँ-बाप की बाते छुपकर से सुन ने लगी।

"जी, आपने उसकी बात सुनी न? आपने क्या सोचा है? हम उसको कैसे बताएँगे?"

"मुझे भी नही पता सुशमा, मैं भी बहुत दुखी हुँ, कि मेरी बेटी कुछ बनना चाहती है, मगर... हम उसको नही करा सकते।"

दोनो एक दूसरे को देखे कुछ देर चुप रहे, फिर बोले,

"अगर वो लड़का होती... तो हम उसके लिए कुछ कर पाते, लेकिन वो लड़की है, पढ़के भी क्या फाइदा? जाना तो उसको भी दूसरे घर में है, वहा तो उसे घर के काम ही करने पढ़ेंगे।"

"आप ने ठीक कहा जी, शायद

ये समाज लड़कियों को भी लड़कों की तरह समान देते। सभी के सपनों का उतना ही महत्व ही महत्व होता।"

दोनों दुखी थे, लेकिन शायद समाज ने उन्हे रोक के रखा था, या शायद अपने ही लोगो ने, जो कहते है, "ओ तो लड़की है, ओ आगे तक की पढ़ाई न करे या करे, उन्हे बाद में अपने ससुराल जा कर काम ही तो करना है।"

मैंने धीरे से दरवाज़ा खोला, माँ और पिताजी ने मुझे देखा और समज गये की, मैंने उनकी बाते सुन ली थी। उन्होने दौड़कर मुझे गले लगाया, मैं उनसे लिपट गयी, और रोने लगी और वो भी रोने लगे।

ऐसा नही है, कि वो मुझसे प्यार नही करते। फर्क बस इतना है की, वो समाज के खिलाफ नही जा सकते है,

क्योंकि ओ गरीब है। या शायद ओ समज के नसीहतों के नीचे दब चुके है।

मैं उनसे बहुत प्यार करती हुँ। उनके लिए कुछ भी कर लूँगी, मैंने ये एक वक्त में तय किया था। अब शायद ओ वक्त था.... मैंने भी अपने खुशी भरे सपने को उनके प्यार से दबा लिया, मगर... ओ हमेशा मेरे दिल में कायम रहे गा। अपने सपने को मैं पा तो नही पायी। लेकिन... उसके लिए प्यार और इज़्ज़त बनी रहेगी।

अगे, मेरे ज़िन्दगी में कोय भी आएगा, तो मैं... उस शक्स से अपना दिल खोल के कहुँगी, ओ भी कसम तक, "मैं एक लड़की हुँ, मगर मेरा भी एक सपना है।"

मेरे पंख दब चुके थे, मेरी मंज़िल

मैं खो चुकी थी।

इस कहानी का उद्देश्य → धरती में रहने वाले हर किसी का, चाहे वो इनसान हो या कायी प्राणि, सभी का एक सपना होता है। एक समय हुआ करता था, जब लड़कियों के सपनों को समाज नज़र अंदाज़ करते थे और उसको उतना महत्व नही देते थे। सभी का एक सपना होता है, और होना भी चाहिए। शायद अपने ज़िन्दगी में आप अपना सपना साकार न कर पाए। लेकिन अपने और दुसरों के सपने को उतनी ही इज़्ज़त औ प्यार देना चाहिए।

—— —— * —— ——